

समकालीन कवियों की रचनाओं में पर्यावरण संरक्षण के सामाजिक सरोकार

लेखिका

डॉ. आशा कुमारी

सहायक आचार्या

हिंदी विभाग

दिल्ली विश्वविद्यालय,

दिल्ली, 110007

*9

लेखक

डॉ० राजेश

विभागाध्यक्ष एवं एसोसिएट प्रोफेसर

मानविकी एवं समाज विज्ञान संकाय

एन. आई. आई. एल. एम्. विश्वविद्यालय

कैथल, हरियाणा,

सारांशिका

समकालीन कविताओं के लेखन का मुख्य आयाम 'आम आदमी' के जीवन की व्यथा है। वर्तमान समय में 1960 के बाद समकालीन परिवेश की हर इकाई में प्रकृति, पर्यावरण, संसाधनों के संरक्षण, वैश्विक उथल पुथल आदि ने कविताओं के सृजन में स्थान पाया। इन कविताओं की विशेषता यह रही कि कवियों के पर्यावरण, प्रयावार्ण संरक्षण के साथ ही पर्यावरणीय प्रदूषण के प्रति चिंता भाव व्यक्त होने लगे। समकालीन बहुत से कवियों ने पर्यावरण विषयक संचेतना को कविताओं के सृजन में स्थान दिया। सामाजिक चेतना को जागृत करने में साहित्यकार जितनी बड़ी भूमिका निभाते हैं शायद ही समाज का कोई वर्ग उतनी बड़ी भूमिका निभा पाए। हम युगों युगों से देखें आ रहे हैं कि साहित्य और समाज के बीच गहरा रिश्ता रहा है। एक कुशल साहित्यकार समाज की प्रगति से हर समय जुड़ा रहता है। वहीं दूसरी तरफ उसका ध्यान समाज की प्रगति में बाधक तत्वों पर भी रहता है। समाज का जिम्मेदार एवं संवेदनशील व्यक्ति ही समाज के इस अहसास से जुड़ता है। इस शोध शीर्षक के अंतर्गत यही अनुसंधान किया जाएगा कि समकालीन कविता में पर्यावरण संरक्षण की संचेतना कवियों द्वारा कैसे व्यक्त की जा रही है। वर्तमान समय की कविता में कवि तथा कवयित्रियों ने प्रकृति प्रेम प्रदर्शित करते हुए प्रदूषण दूर कराने अथवा पर्यावरण के प्रति सजगता बरतने के लिए अपनी कविताओं के माध्यम से कौन से उपाय सुझाए हैं। ऐसे ही सामाजिक रूप से संवेदनशील मुद्दों पर अध्ययन इस चयनित विषय के अंतर्गत किया जाएगा।

बीज शब्द:- पर्यावरण, जलवायु, परिवेश, समकालीन कवि, मानवीय व्यवहार, प्रदूषण, पर्यावरणीय चेतना।

समकालीन कविताओं में पर्यावरणीय संचेतना की उत्पत्ति :

प्राचीन काल से मध्य काल तक कविता में प्रकृति की भिन्न भिन्न सुन्दर दशाओं का वर्णन किया जाता था। इस दशा में मानव मन के अनेक भावों की अभिव्यक्ति प्रकृति के विविध छटाओं के अलंकारिक अभिकरण के रूप में चित्रित किये जाते थे। अगर हम देखें तो हम पते हैं कि प्रकृति का मानव से संबंध तो बहुत पुराना है। इसी लिए सभी काल में सभी प्रकार के कवि तथा कवयित्रियों ने कविता में 'प्रकृति' को सबसे महत्वपूर्ण स्थान दिया। परंतु इन सभी काल से 'समकालीन कविता' का युग इसलिये भी अलग है कि इस समय में कवियों ने पर्यावरण के प्रति अपनी सहजता, सजगता एवं निपुणता के आधार पर प्रकृति संरक्षण के

भाव जगाने की संपूर्ण कोशिश की है। इस धारा में अनेकख्यात कवि एवं कवयित्रिहैं। इस तरह के विचार व्यक्त करने वाले एवं उनकी प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं - भवानीप्रसाद मिश्र (नीली रेखा तक), बुद्धदेव निहार(नदी की मौत पर), शरद बिलौर (पेड़), कवयित्री माया मृग (शब्द बोलते हैं), हरीनारायण व्यास (बरगद के चिकने पत्ते), रमाणिका गुप्ता (प्रकृति युद्धान है), इंदुकांत शुक्ल, (सागरवेली), स्नेहमयी चौधरी(चौतरफा लढाई), आदि अनेक समकालीन कवि तथा कवयित्रियों ने अपनी कविताओं के माध्यम से 'पर्यावरण' संचेतना को बड़े ही जीवंत रूप में अपनी अपनी कविताओं द्वारा मूलतः अभिव्यक्त किया है। आज के परिवेश की कविताओं में प्रकृति संरक्षण के भाव अधिक चिंता की तीव्रता से व्यक्त होने लगे हैं।

पर्यावरणीय असंतुलन एवं सामाजिक एकाकीपनमें अन्तःसम्बन्ध :

पर्यावरणीय असंतुलन मुख्य रूप से दो कारणों से उत्पन्न हो सकता है I पहला मानवजनित और दूसरा प्रकृतिकजनित इन्ही दोनों कारणों से हमारा पर्यावरण प्रभावित हो रहा है। वर्तमान समाज में चर्चित अनेक विभीषिकाएँ जैसे चेर्नोबिल परमाणु विस्फोट, हिरोशिमा नागासाकी बम विस्फोट, भोपाल गैस त्रासदी, चीन की बाढ़ और उत्तराखंड में बादल फटने की घटनाएं, हिमाचल प्रदेश में बाढ़ के पानी से आये दिन होने वाली त्रासदी पर्यावरणीय असंतुलन से उत्पन्न घटनाएँ हैं I जिनमे प्राकृतिक और मानवजनित घटनाएँ सामान रूप से सम्मिलित हैं। प्रगतिवादी आधुनिक युग में मनुष्य के समक्ष अनेक चुनौतियाँ और संकट आने वाले हैं। जिनका शायद खुद विज्ञान को भी पता न हो I विगत वर्षों कोरोना महामारी भी इन्ही बिना बताये आने वाले संकटों का ही एक रूप रही है I अगर हम पर्यावरण के प्रति सचेत एवं सजग नहीं रहे तो नजाने कितनी ऐसी ही अनजान महामारिया मनुष्य जीवन के लिए खतरा बन कर आती रहेंगी I

जीवन की विभिन्न पर्यावरणीय विषमताओं के बाद भी मनुष्य अपने मुश्किलों के दिन समय के साथ भूल जाता है, और फिर वही अंधाधुंध पर्यावरणीय दोहन के साथ ही फिर नई मुसीबत मोल लेता है I आज भिन्न भिन्न प्रजातियों के विलुप्त होने के साथ साथ मनुष्य धरती पर एकाकी प्राणी बनने की ओर अग्रसर है I धीरे धीरे जीवों की अनेक प्रजातीय धरती से खतम हो रही हैं I साथ ही सामाजिकता का पराभाव हो रहा है I समाज नैतिक, सामाजिक एवं पर्यावरणीय पतन की तरफ जा रहा है I अब तो प्रदूषण ने भी कई रूप ले लिए हैं I सामाजिक प्रदूषण इस तरह विकराल रूप धारण कर रहा है कि परिवार भी एकाकी होने लगे और अब

जमाना वो आया है की लोग एकाकी जीवन भी जी रहे हैं I विडंबना यह है कि एकाकी हो कर भी मन की शांति नहीं मिलती ऐसे में मानव जीवन नकारात्मकता की तरफ बढ़ने लगता है I मनुष्य अपने एकाकीपन में पुरानी स्मृतियों को याद कर उन्हें भूलने का प्रयास करता है। समकालीन प्रसिद्ध कवि मंगलेश डबराल की कविता 'चुपचाप' में एकाकी जीवन का चित्रण किया गया है। कवि का कहना है की एकाकीपन की सोच समाज एवं पर्यावरण को दूषित कर रही है I तात्पर्य यह है कि आज जरूरत है हम प्रकृति के संरक्षण के लिए एकाकी न हो कर एक धरती एक परिवार की सोच रखें I

समकालीन कविताओं में पर्यावरणीय समस्याओं के प्रति सामाजिक चिंतन :

पर्यावरणीय चिंतन को दर्शाते हुए समकालीन कवि जसवीर त्यागी ने अपनी प्रसिद्ध कविता 'पेड़' में सोये हुए मनुष्य जाति को चेतावनी दी है कि हे मनुष्य जाति तुमको वस्त्र, आशियाना और अन्य प्रकार की सामग्री वृक्षों ने निःस्वार्थ भाव से दी फिर भी तुम निरीह निर्दोष वृक्षों का कट कर उनका बे वजह अंधाधुंध दोहन कर रहे हो। इस संबंध में कवि का महत्वपूर्ण मार्मिक ध्यानाकर्षण वृक्षों के महत्व को रेखांकित करता है। जैसे चार पंक्तियों से प्रदर्शित हो रहा है :

माँ अब

कौन-सा दुनिया में आने वाली है

जो आकर पूछेगी

कहाँ है मेरा लगाया हुआ पेड़?

दूसरी तरफ जहाँ हम जल के प्रदूषण से स्वयं को नहीं बचा पा रहे हैं। वहीं पर समकालीन प्रख्यात लेखक रमेश मयंक की कविता 'नदी माँ का दुलार' ने कवि के भावों से जल प्रदूषण के प्रति जन जागरण का काम किया है I इस अकेली एक कविता ने तो सम्पूर्ण जन मानस में जल के प्रदूषण को रोकने के लिए हम सभी के समक्ष एक प्रश्न खड़ा कर दिया है। कवि इसमें कहते हैं कि पवित्र नदी हमें जीवन देने वाली एक माँ के ही समान होती है। हमारे लिए ये नदी की निरंतरता और अनवरत बहाव हमारे जीवन के संघर्षों और कठिनाइयों से लड़ने के लिए हमें प्रेरित करती हैं I नदियों ने माँ की तरह ही हमें कभी अकेला नहीं छोड़ा I नदियाँ हमारी सेवा ठीक माँ की तरह करती है। सदियों से मानव जाति को को नदी माँ के निर्मल आंचल में दुलार, शांति, सुरक्षा, और अनवरत प्रेम का अहसास होता रहा है I नदियाँ जीवन के हर मोड़ पर सभी को सुकून और सहारा देती है।

जल संचय की तरफ प्रेरित करते हुए समकालीन कवि सदानंद शाही ने अपनी कविता 'कुँए सूखते चले गए' में कहते हैं कि मुनाफाखोरों की कारगुजारियों से आज उत्पन्न जल संकट भविष्य में मानव के लिए प्रलय से कम नहीं होगा। सदानंद शाही ने इस कविता के माध्यम से यह भी बताने का प्रयास किया है कि कुँए का पानी, जो कभी हमारी और पूरे गाँव की प्यास बुझाता था, अब वही कुँए सूखकर खत्म हो चुके है। यह घटना न केवल धरती पर आने वाले भविष्य के जल संकट की ओर इशारा करता है, बल्कि हमें यह भी दर्शाता है कि हमारी धरती पर सामाजिक और मानसिक रूप से जो संसाधन उपलब्ध थे, वे अब समाप्त हो रहे हैं। प्राकृतिक जल स्रोतों पर मुनाफाखोरी के बादल मड़राने लगे हैं। आज नामी गिरामी कंपनियों ने प्राकृतिक जल संसाधनों पर कब्जा कर लिया है। समकालीन प्रसिद्ध कवि प्रेम शंकर शुक्ल ने 'पानी का मतलब' नामक चर्चित कविता में मानव जीवन आने वाले समय में जल संकट से सम्बंधित समस्या की गहरे तक पैठ कर रही व्यवस्था को व्यक्त किया है। और कहा है कि साफ़ सुन्दर निर्मल नदियों और झरनों से झर झर करता पानी आज भारत में भी सात समुंदर पार से आई संस्कृति की तरह केवल बंद बोतलों तक सिमट कर रह गए है।

आकाल पर अपनी व्यथा व्यक्त करते हुए समकालीन प्रसिद्ध कवि लीलाधर मंडलोई की कविता 'गाने' में अकाल की स्थिति का मार्मिक वर्णन कवि ने किया है। इसमें कवि कहते हैं कि प्रकृति में पड़ा अकाल किसान और मजदूरों की आकाल मौत की तरह ही है। सरकारी आंकड़ों में तो अकालग्रस्त क्षेत्र घोषित होने पर खूब हो हल्ला मचता है। लेकिन अकाल से लड़ने और उसका सामना करने वाली स्थिति पर किसी भी सरकार एवं मीडियाकर्मियों द्वारा कभी गंभीर चिंता व्यक्त नहीं की जाती। यही कारण है की आकाल आने की निरंतरता कम नहीं हो रही।

निष्कर्ष :

समकालीन कविता की रचनाओं का युग वास्तव में पर्यावरण त्रासदी के वर्णन का युग है जिसे समकालीन अनेक कवियों एवं कवियत्रियों ने अपने काव्य का विषय बनाया है। ऐसे ही भाव व्यक्त करते हुए कवि दीपक कुमार कहते हैं-

“पास के एक गांव में भटकी एक कोयल

कूक रही है भरी दुपहरिया में

कंक्रीट की अमरैया में,
कहाँ बची है छाँव
जो इत्मिनान से तू ले सके आलाप
कोई तो अमराई बची होगी कहीं पर

हिन्दी साहित्य की रचनाएँ हर परिवेश में दर्शन से प्रभावित रही हैं। हिंदी के लेखकों विशेषतः कवियों कवियत्रियों का प्रकृतिके प्रतिप्रेम, प्रकृति के प्रति संरक्षण आत्मानुभूति तथा समाज में किसी को कभी अनायास हानि न पहुँचाने का भाव हिन्दी साहित्य की रचनाओं में बहुतायत से पाया जाता है। ऐसा सामाजिक दर्शन ही पर्यावरण के संरक्षण का द्योतक है। अगर हम पड़ताल करें तो हम पाते हैं कि प्रकृति और पर्यावरण से भारतीय धर्म मूल रूप से जुड़ा हुआ है। समकालीन हिन्दी कविता में अनेक ख्यात कवियों एवं कवयित्रियों ने पर्यावरण को बचाने की चिंता को प्रमुखता से व्यक्त किया है। समकालीन कविता में कवि एवं कवयित्री प्रकृति के मोहक रूपों का अलंकारिक चित्रण करने के साथ साथ ही प्रकृति के विनाश के आने वाले कारणों की भी पड़ताल करते हैं। आजका कवि प्रकृति में उत्पन्न अनेक विकृतियों का अध्ययन कर उनके समाधान के भिन्न भिन्न मार्ग उजागर करता है। अनेक पर्यावरणीय समस्याओं जैसे ग्रीन हाउस गैस, ग्लोबल वार्मिंग, अनेक प्रकार के पर्यावरणीय प्रदूषण, उत्सर्जन, विकसित और विकासशील देशों की आपसी प्रतिस्पर्धा भूमंडलीकरण इत्यादि आजकल के हिंदी लेखन का प्रमुख आधार हैं। जिससे पर्यावरणीय सामाजिक जागरूकता का विकास हो सके। अंत में साहित्य सृजन में प्रकृति के नव जागरण में लिखी दो पंक्तियाँ जो किसी समकालीन कवि ने लिखी कुछ इस प्रकार हैं।

आओ हम सब पर्यावरण बचाएँ, सुन्दर सा एक दृश्य बनायें।

बदलें हम तस्वीर जहाँ की यह संदेश चहु ओर फैलाएँ।

सन्दर्भ ग्रंथ :

1. चौधरी, स. (2018). हिंदी कविता में पर्यावरणीय संकट: एक आलोचनात्मक अध्ययन (Environmental Crisis in Hindi Poetry: A Critical Study). *हिंदी शोध पत्रिका*, 34(2), 42-55।

2. दुब्राल, म. (2001). चुपचाप (Chupchaap). इननई कविता के हस्ताक्षर (Signatories of New Poetry) (पृ. 45-47). हिंदी साहित्य अकादमी।
3. कुमार, अ. (2017). प्रकृति और साहित्य (Nature and Literature). वाणी प्रकाशन।
4. कुमार, द. (2017). समकालीन कविता में सामाजिक सरोकार और पर्यावरणीय चेतना (Social Responsibility and Environmental Awareness in Contemporary Poetry) (अप्रकाशित मास्टर थीसिस). जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।
5. मंडलोई, ल. (2004). गाने (Gane). कविता और पर्यावरण (Poetry and Environment), 21(1), 40-42।
6. मयंक, र. (2003). नदी माँ का दुलार (NadiMaa Ka Dulaar). इनसामाजिक और पर्यावरणीय कविता (Social and Environmental Poetry) (पृ. 123-125). साहित्य अकादमी।
7. मिश्र, ब. प. (1996). नीली रेखा तक (Neeli Rekha Tak). राजकमल प्रकाशन।
8. मिश्र, र. (2019). समकालीन हिंदी साहित्य में पर्यावरणीय चिंतन (Environmental Thought in Contemporary Hindi Literature). समकालीन हिंदी साहित्य पत्रिका (Contemporary Hindi Literature Journal), 45(1), 29-34।
9. पांडेय, र. (2016). समकालीन हिंदी कविता में पर्यावरणीय चेतना का स्वरूप (The Form of Environmental Awareness in Contemporary Hindi Poetry) (अप्रकाशित डॉक्टोरल थीसिस). दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।
10. शाही, स. (2005). कुँए सूखते चले गए (KueSookhteChale Gaye). समाज और पर्यावरण (Society and Environment), 22(4), 99-101।
11. शुक्ल, प. स. (2006). पानी का मतलब (Pani Ka Matlab). हिंदी साहित्य समीक्षा (Hindi Sahitya Sameeksha), 18(2), 76-79।

12. सिंह, प. (2018). हिंदी कविता: सामाजिक और पर्यावरणीय दृष्टिकोण (Hindi Poetry: A Social and Environmental Perspective). *भारत साहित्य वाचन (Bharat Sahitya Vachan)*, 10(3), 56-58।
13. त्यागी, ज. (2002). पेड़ (Ped). *इनसमकालीन कविता और समाज (Contemporary Poetry and Society)* (पृ. 67-70). राजकमल प्रकाशन।
14. वर्मा, स. (2015). *समकालीन हिंदी कविता और पर्यावरणीय चेतना (Contemporary Hindi Poetry and Environmental Awareness)*. दिल्ली विश्वविद्यालय प्रेस।